

॥ श्रीकरणग्रान्तपृष्ठ ॥

1

॥ শঙ্খ ॥

॥कृष्णावीक्षुनुसासा॥ वैष्णवमहता॥

॥ उम्मेसगमायनमुकाला

(१८) ॥ अरता ॥
॥ सरबकीर्ताग्रण भगवत्कीर्तानि वरी ॥ नीस

॥ गायत्रेयमन्तंगाविहगांतरी ॥ श्रीकृष्णनीजन

। न ज्युक्तवेशधारी ॥ कलीभृत्युज्ज्वलीर्मनसा

॥ क्षमेहारी ॥ १ ॥ जयदेवन् पदवजेमायक्त्वा अ
॥ लोटुज्यातुदरानीरसीममतृष्ण ॥ जयदेवन् यदेव ॥
॥ हारीहरसुदरबोधठेव्वा सीज्जले ॥ इमानं देव
॥ धे मीकणीमीज्जले ॥ भौसीपेसगंभीभीसको
॥ नीग्गले ॥ रामदासस्त्राचिकिंदीपछुले ॥ जयदे
॥ वजयदेवजेमायक्त्वा अज्जोलुज्यातुदरानीर
॥ सीममतृष्ण ॥ जयदेवन् पदव ॥ २ ॥

~~मात्रार्थी द्वारा लघु अपनी भूमिका परिवर्तन
वाक्याल स्वर्णि ग्रन्थ स्वर्णि ग्रन्थ स्वर्णि~~

२८
महात्मारुद्रयोगवर्णके लिए पुनः

~~प्रायः एव विद्युता रथं लिपेष्ट विद्युता रथं लिपेष्ट~~

~~त्रिपुरापुर त्रिमुखी चूम्हा~~ त्रिपुरापुर त्रिमुखी चूम्हा

तमप्राप्तिमयं प्रथमोऽनुज्ञानाद्यवर्तमानीकृतम्

(2B) ~~प्राणमिति चान्तक पूर्वी उपायलाभाल~~

द्वितीय अध्याय शुक्रवार शुक्रवार

~~दरक्षिणादेव उत्तरादेव एव अन्यत्र न देव~~

परमात्मा द्वया प्रभु अवश्यक नहीं

~~બેન્ડાયિન્ફર્લેપ્ટિક્સએન્ટ્રેન્ડિંગ~~

३४८ असार दिन विश्वामित्र आदि

३ अपारिदृश्यता विश्वामी

³ वृत्तिरुद्धरणम् विद्यालयानाम् विद्यालयानाम्

३८५

१७ दिनांक सन् १९८५ इति उल्लङ्घनं पूर्णम्

~~ପ୍ରାଚୀନ କୋଣାର୍କ ମହାଦେଶ~~

२५४ अस्त्राय देवता देवता देवता देवता देवता

~~कुरु रघुनाथ नाम द्वारा अद्वितीय विजय के लिए~~

— ཆ ར ས ག ད ལ ཉ ཁ ཉ ཁ ཉ ཁ ཉ ཁ ཉ ཁ ཉ ཁ ཉ ཁ ཉ ཁ ཉ ཁ ཉ ཁ ཉ ཁ ཉ ཁ ཉ ཁ ཉ ཁ

(3A) उपर्युक्त विधि का अनुसार स्वास्थ्य विभाग

१३ विष्णु भवति विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु

~~मुख्यमंडल और यात्रा की परिस्थिति~~
dhan Mandal, Dhule and the Yash

A portrait of a man with a white turban and a yellow robe, looking slightly to the left. The portrait is framed by a decorative border. To the right of the portrait, the name 'Chavara' is written vertically in Devanagari script.

Prästischen, Münster
Katholische Kirche
und Projekt Ortho

३५२ अन्तिम वर्ष १९४७

(१८६४) पाठ-प्रश्ना विषय संक्षेप

(38) କରୁଥିଲାମାତ୍ରାନ୍ତିରେ ପାନିରେ ପାନି

ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରିରେ ପରିଦ୍ୱାରା କରାଯାଇଥାଏଇବୁ

५८

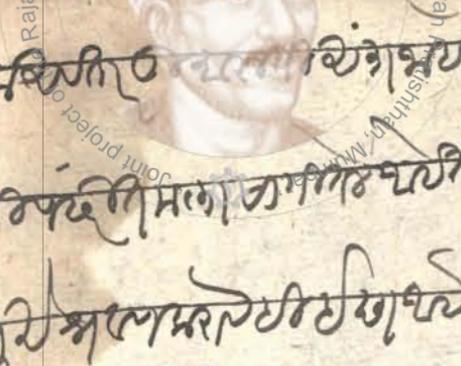
ପ୍ରକାଶପତ୍ରମିନାରାଧାରୀ ପ୍ରକାଶପତ୍ରମିନାରାଧାରୀ

(३c) - छजान्ति वन्नमिद्योः

~~की जाति पर सबल हो गया है। वह अपने मिश्र~~



१८॥ असाध्यं भयं उपातु उगातु वापि ॥
२०॥ चरणिष्ठम् लग्नम् निपत्ती भवत्येषां स्वास्थ्य-
२२॥ छन्दो भृत्य एष भृत्या भृत्या भृत्या भृत्या ॥
२४॥ द्वाराभृत्या भृत्या भृत्या भृत्या ॥
२५॥ या सिश्वद्वै इय के रत्न वसावा ॥ आधी वहो देव ॥
२६॥ कुल पूज ॥ १ ॥ न बोला वै परिणाक वै वरन ॥
२७॥ के लिया कान्त्रभृत्या संति ॥ ३ ॥ संसाहिया ॥
२८॥ दुख जात्यादुःखा च यारा दी ॥ माय बोपद्रो ॥
२९॥ रवी कर्मयिली ॥ ३ ॥ है वान्वेदे दुःख होते संग ॥
३०॥ लेण ॥ चित्ता सह आले करविन्द्रा ॥ आदुकाळी ॥
३१॥ आटलो इव्यं न ले मानि ॥ लिय कञ्जन करिता ॥
३२॥ मेली ॥ ५ ॥ लोज वोट जिया त्रास लोयादुःखा ॥

॥ वेलाईदेवं तु हयत ॥६॥ काहीयाठके लीसं ॥
॥ ताविउत्तरे ॥ विश्वोसआदरें करनिया ॥७॥
॥ तीपुछेहाचेधरोहुपद ॥ अवीचीतशुधकस ॥
॥ नीय ॥ वास्य आस्त्यासीमनके गवाई ॥
॥ मानीयेनाही बहुमत ॥८॥ मानीयेलाल
॥ व्युगुरजापहरा गधरीलावी आसद्धम
॥ नी ॥९॥ टाकलातोभेडपोपकारा ॥ केवे
॥ होरारीरकहुनी ॥१०॥ सतंचेरोवीये
॥ लेतीर्थपायवणी आरंभकीर्तनीकरीता
॥ जालो ॥११॥ नकहे आस्यासीमनवीत आ
॥ थी ॥ लालनीहीमधीयेउदीषी ॥१२॥ तथा
॥ वरीजालिकवीत्वाचीस्पुती ॥ पायधरले
॥ चीतीवीढोबाचे ॥१३॥ नीषधाचाकाही
॥ पडीळा आवाल ॥ लेणेमधे चित्कुरववण
॥ कुडवील्यावह्योवेसलेघरणे ॥ केल्वा ॥१४॥
॥ रायेणेसमाधान ॥१५॥ अडेतोचीआ
॥ तादीसलोभकार ॥ पुढीलाचीनारदेव
॥ लणे ॥१६॥ टुक्राम्भेमाइसवभाइव
॥ ल ॥ बोल्वीलवोलपाइरेस ॥१७॥१८॥
यामयाप्य राजावाल लक्ष्मीप्रदान
प्राप्तस्थिर ॥ चल विश्वामित्र
अनिष्टिमला अमाग्नि चपूर्णिष्ठ
स्वामुख्यमहरेयर्थिगुरुप्राप्तिर
रुवभमध्येष्ठ ॥ छेन्हेवृष्णारम्भेष्ठ
स्वामुख्यमहरेयर्थिगुरुप्राप्तिर
प्राप्तिर्थिगुरुप्राप्तिर


॥ मनोचार्धीदणता वीछुमुख्यसाधु ॥१९॥
॥ धुनीयाकोधुवीलागी ॥२०॥ वीधीपसुनिया
॥ इनवीधीसुता ॥ लेनीशानभापवसीष्टसी
॥ वसीद्वयपदेवकेलारामचद्रागलेचीमद्दी
॥ सुद्राहानुमता ॥२१॥ हनुमतकीमाई
॥ चरनीव ॥ जालेदेवसर्वकोधन्तप ॥२२॥ वी
॥ अनारयेणहुनीवैसला ॥ उपवकेलीलो
॥ व्यासमुनी ॥२३॥ व्यासमुनीवौलीजीवीस्य
॥ पुराण ॥२४॥ गुधरणेकलीमाजी ॥२५॥ क
॥ छीमाजीगोदातीरीपुष्पक्षेन ॥ लेधेवालपु
॥ भञ्जावलेर ॥२६॥ अवलेर आभीधाधीनी

॥ रामदास ॥ क्रमानीरीवस्तुलगदेधार ॥
॥ जगदेवधरासाठीश्चिरमासाक्षेत्र ॥ कैलेवडे ॥
॥ केडेभक्तीपथे ॥ १ ॥ भक्तीपथमोगकेला
॥ श्रिरामाने ॥ जबुनाजीधन्तुधे ॥ १० तेपे
॥ बहुनीद्युत्ताधीद्युत्तपुर्ण ॥ सुधनिमृजण
॥ दीजवर्ण ॥ दीजवर्णसुर्यजैसात्पैधन
॥ जादगुलबीदंजनजेतेधे ॥ १२ ॥ जालीरा
॥ मनवमीमध्यजाद्यमीस्पि ॥ जार्थरामी
॥ यासीदुत्तजाले ॥ १३ ॥ दुत्तजालेपुण्डवा
॥ लुनीचालीले ॥ महाद्वाजालेश्वीमज्जेपे
॥ श्रीमदेवत्यालेनुनीतयासी ॥ तेधेउभ
॥ यासीदेववीयेले ॥ १५ ॥ देववीयेलेराज्य
॥ पुत्रसुर्यवौरंसी ॥ इष्टपटीनिवासीपेलेकु ॥
॥ पेडेलेहाजसाद्यवलभुमी ॥ मगञ्चातरधा
॥ मीबोलावीले ॥ १७ ॥ बोलातुनीयामाधो
॥ वीसव्यपणी ॥ मवसागेकर्णीरामनाम
॥ १८ ॥ नामसागेनीयातमृमुतीरम्य ॥
॥ पठभीश्चिरासदीधकान्य ॥ १९ ॥ तयादी
॥ लावरदुजपुरहोतीर ॥ छ्वजन्तुभारी
॥ लरामदासे ॥ २० ॥ दासद्वजलेधम
॥ वोरोधान ॥ वलनीत्वर्गबजाले ॥ २१ ॥
॥ जालारामन्दू भावधधार ॥ माध्यम
॥ नीसत्वरजन्मजालेमर्त्त ॥ जन्मजालं
॥ इलेदेववर्णाजागेऽपसेनवालेसद
॥ वाची ॥ २३ ॥ राववाचीभतीसुरवाचीवी
॥ श्रांती ॥ पीतयाचीहा लीजालीपुछ ॥ २४ ॥
॥ कुपुछजेवं बधुनसागेचीकाही ॥ सुरेव
॥ देवालीनीद्राकेली ॥ २५ ॥ नीद्राकेली
॥ लेघेरामेउठुनी ॥ लोचीमभकानी ॥
॥ सागीतला ॥ २६ ॥ सागीतलाबोधरमी
॥ रामदास ॥ गुरुव्याहीवीशानीरोपिले ॥ २७ ॥

(60) ~~कर्मद्वयोऽप्येषां प्रतिगमनम् च इति~~
~~कर्मद्वयोऽप्येषां प्रतिगमनम् च इति~~
~~कर्मद्वयोऽप्येषां प्रतिगमनम् च इति~~

अहोम्येद्युतिज्ञानात्प्रणाल्युक्तिरागास्तस्मा
माजेऽग्नेष्वेतिप्रविभावेष्येष्वेतिप्रविभाव
ज्ञानात्प्रणाल्युक्तिरागास्तस्मा
ध्यप्रस्तरामांत्रिक्षेत्रात्प्रविभावेष्वेतिप्रविभाव
नीन्दिष्टमेष्वेष्वेतिप्रविभावेष्वेतिप्रविभाव
द्वेष्वेतिप्रविभावेष्वेतिप्रविभावेष्वेतिप्रविभाव
न्युप्रसारेष्वेतिप्रविभावेष्वेतिप्रविभाव

~~प्राप्ति विकल्पिता विषयको परीक्षणे निर्माण~~

Manda, Dhu and the

देवं यशोदाम् *यश्वा देवोऽस्मि* *यशोदाम् यश्वा देवोऽस्मि*

Chavat Phatthalung
Chawat Phatthalung
Chawat Phatthalung

~~उद्धरणात् अनुभवं अपेक्षये~~

~~मारस्तु शास्त्रीयोग्यता प्राप्ति विद्या अधिकारी रामेश्वर~~

~~संस्कृते अनुवादी उत्तीर्ण विजय लोक रेखा~~

गोपनीयता विलोमोद्युग्मास्त्राद्याद्य

ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੋ ਯਹੀ ਪਲੇਖਾ ਨਿੰਤ ਪੁਛੇ ਬਾਣੀ ਕਿਸੇ ਵੀ

~~मानवों के लिए भूमि वितरण की जगह~~

~~दादी गुरुज्जेतपनिषत्तु-प्रसंगमात्~~

~~କରୁଣାଳେଖନେବେଳୀପରିମାତ୍ରାହୁତିକାରୀ~~

~~गोदावरी गोदावरी गोदावरी~~

ज्ञानित्वे द्रव्यमन्तरेष्टार्थो द्वयालक्षणं तु

तिरुमरीष्टानिष्टना उल्लोऽपनी

१७
ज्ञानमहरेहेतिमादावितीवन्देशो
ज्ञानाप्यतिष्ठयतिथगतिवेदेतिविद्वन्
नप्यन्नायवद्वाप्तेवेतिविद्वन्
नप्यविज्ञानप्यतिविद्वन्
चाप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
रवलिचारविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
१८
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
१९
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
२०
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्
नप्यविद्वन्

Joint Board of the
Manav Dhule and the Yashodhan
Pratishthan
Member No. 161
Ranjan Chauhan

10

9

۲۷

(13)

三

१३८
महाराष्ट्र राज्य विद्यालय कालेज यशवंतराव सिंह पुस्तकालय
गोदावरी मंडल, धुळे एवं यशवंतराव सिंह पुस्तकालय
गोदावरी मंडल, धुळे एवं यशवंतराव सिंह पुस्तकालय

٩٤

The Rajabai de Sapendhan Mandal, Dhule and the
Yogeshwarantrao Chiplunkar Vantral
"Joint Project", Mumbai.

160

16B

16C

96

पृष्ठ १

भावताऽगराजाचोकेर सध्येदेवा चेत्तिरनर
॥ पुढे संउय संदरनवरणा चा ॥ १ ॥
चोरवाना चीरचनवरसाचोवीसकमाना
॥ कमकद्यवनयनासमाधान ॥ २ ॥ नानध
स्तु आपेवनदोहो कुडवद्यवने ॥ वद्यवदे
जगड्ज्ञजड्जीवने वसिकेलि ॥ ३ ॥ पुढे उ
माकषिवीर पूर्वेकेडं बोदर ॥ खालूदाट्टेल

देवरवारनानापरि ॥४॥ मृद्गमेववधुडेवा
 जतिधंडकेभ्रात्याचेगाजनि ॥ पोजाभक्ता
 चासाजनिठाइठाई ॥५॥ माहिमारतवेनि
 शाणेमधुडंबेरसूर्यपाने ॥ दिंउयापताकाध
 आसखासनेविंशणेकंचे ॥६॥ काह
 लेकणेकुहगवा के ना नाध्वनीगग
 नझाकेवहवाधा चेघवेकेपेरायरि ॥७॥
 टाकमृदंगउपांगंब्रत्तविषेचुटकया
 वैग ॥ तानमानेमाशेरगंहरि कथोसि

॥८॥ चंदाघंठांरभेरीडफरीष्विवज्जतरि ॥
 ॥ भाटगर्डतिनागरिपरोपरि ॥९॥ उदंडयोत्रेक
 ॥ रुआलेगीहारीदासमिठलेन ॥ श्रोतवत्तेक
 ॥ थावालेनगंवलावि ॥१०॥ नानापुष्यमालातु
 ॥ रेपाहोजातामडसपुरा ॥ रंगस्वर्ग्वाउभेरेण
 ॥ ई ॥११॥ गंधसुंगधकेशरउदंडउघलतिधूसेरा
 ॥ जगदांतरहारीहोवस्तिकेली ॥१२॥ हिव्याहि
 ॥ लालेवंडयातिनेक्षेआरउत्तउठति ॥ वाणह
 ॥ वयाद्वरकतिगगनामध्ये ॥१३॥ उदंडमनुष्या
 ॥ वेथोठदिसजातिलखलखोटा ॥ येकमेकासीबो
 ॥ भोटबोलवीति ॥१४॥ उदंडउजकीत्यादीपकाना
 ॥ मधोषकरतालिका ॥ किलेकोएकाकाशब्दहो
 ॥ ति ॥१५॥ क्षीरापतिवीवाटणितेथेझालिजेसे
 दाटणि ॥ येसाकाहीराजांगणीदाईआहुकि ॥१६
 रुगमाकानिरोजनेवेयवस्तिकिसने ॥ दिवस
 उगवलासमनेकोमापिठि ॥१७॥ रथदेवाचा
 ओटलाशत्रैकरनिरोयजाना ॥ युटेजायाचा
 द्विगद्वा ॥१८॥

भक्तेजनत्त्वाणत्त्वदेवा आगाढानजसो
 धावा ॥ धन्यकृताचारेव नजेन्द्रिया ॥१९॥

सुदासजंगराग्नु ॥ याना वाचोधाहता ॥२०॥ उदु
 वभक्तासवेजातोध्यानसुन्नेन ॥२१॥ उदु ॥२२॥

लप्रदेनेजाग्नप्रतिपित्रिप्रियदृष्टिप्रमुखीप्र
 ातिमुपोन्हमीनप्रसादाग्नुहृद्यमंदिरुपरीभेनि

उदुप्रदेनेजाग्नप्रतिप्रियदृष्टिप्रमुखीप्र

चीमरे

१ चल → १ चतानेगालप्रिमर

१ रुक्ष → १ एरगाए

१ ऊरिप्रिमर → १ ग्रद्यदेलोगुरप्रिमर

१ ज्वरप्रिमर → १ मर्वेन

१ भीमदीजल → १ नेमानाम

१ जीवद्वालप्रिमर → १ जोद्वगोजप्रिमर

१ च्छापानाचप्रिमर → १ न्हुद्वद्वरुप्रिमर

उदुरेन → १ ग्रेनप्रिमर

१ चोटाजगाजप्रिमर → १ ऊरिप्रियदृष्टिप्रिमर

मर्हदेशगार → १ छामिंगाजप्रियदृष्टिप्रिमर

चंतिभवद्वद्वेषमुर → १ चीमद्वगालप्रियदृष्टिप्रिमर

2

19

મોલાનમણિનાથદે

477

(20) यमादिव्यरुद्धनामास्यपीडित्युंदमध्यानि

वर्तिष्ठमभलस्त्वनातीतीक्ष्वपुरीष्ठम्

रुद्धेत्तिष्ठयुपीडित्युंदमध्यारम्भाप्तिष्ठम्

वात्येत्तिष्ठमभिष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

स्त्रहंशथविष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

मुग्भविष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

रुद्धेत्तिष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

तिष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

नृवात्येत्तिष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

घोग्येत्तिष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

चर्विष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

(20A) रीत्येत्तिष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

घोरेत्तिष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

मरुज्ञम्भारम्भाप्तिष्ठम्

अमराज्ञम्भारम्भाप्तिष्ठम्

देयेत्तिष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

उम्भारम्भाप्तिष्ठम्

जेत्तिष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

(20B) रुपारम्भारम्भाप्तिष्ठम्

गरुद्धुम्भारम्भाप्तिष्ठम्

मण्ड्युम्भारम्भाप्तिष्ठम्

मरुम्भारम्भाप्तिष्ठम्

मरुम्भारम्भाप्तिष्ठम्

तिष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

स्वामिनिष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

(20C) स्त्रियूष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

नैव्याचेत्तिष्ठम्भारम्भाप्तिष्ठम्

रुद्धम्भारम्भाप्तिष्ठम्

मरुम्भारम्भाप्तिष्ठम्

द्युम्भारम्भाप्तिष्ठम्



Yashoda Maa
The Mother of Krishna

21

27

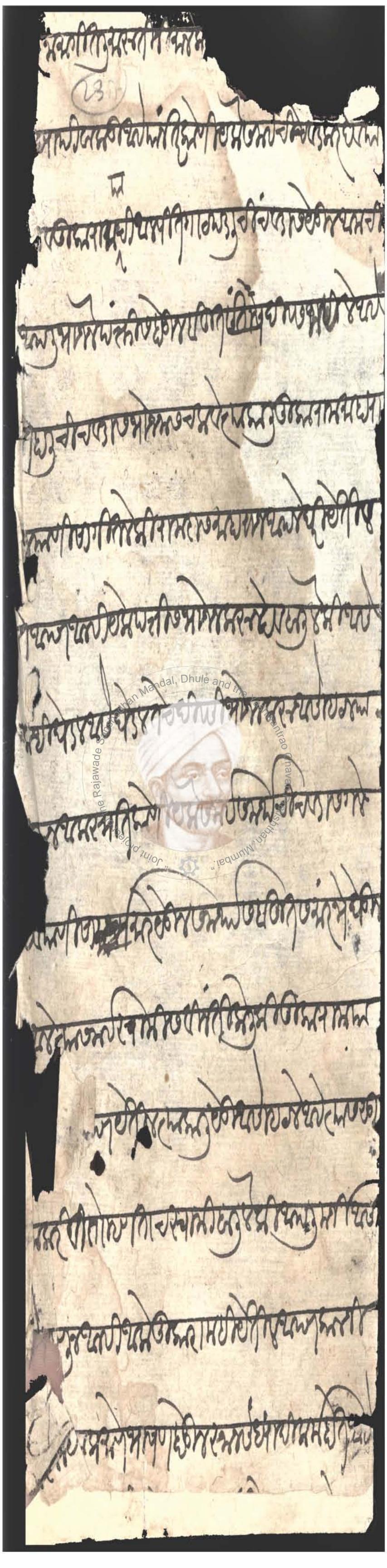
॥ स्मान ते तो य आङ्गुं त आले ॥ ३ ॥ ब के चालि ला ॥
॥ वो धने टे ध डा डा ॥ न भी धा वति लो ट ला डा ॥
॥ ध डा डा ॥ न दि चा लि लि रा मध्या न ख जे थे ॥
॥ ब के विक्रमे पा व ला भिम ने थे ॥ ४ ॥ उभा ॥
॥ रा डि ला भी मरु पी ख भा वो ॥ ब के तु वं चो रु ॥
॥ व विला दो न गा वो ॥ न दि ये कवि भा गलि ॥
॥ दो न बाल्से ॥ सुषो नि तया ना वं हे गा व बाल्से ॥
॥ ५ ॥ मुखे लो टे ता दो वि ले रा मलिं गा वा ॥
॥ के चालि ली भी वति क्रचा गंगा ॥ परि ॥
॥ पा हा ता भिम ने थे दि से ना ॥ उदा सी न ते ॥

का ठेव सन्नी॥ धृहानुमंत पाहा व कर
गिआले॥ दिसेना सखा थोरवि स्मीतजाले॥
त बाविण देवा लव तेउदास॥ जेक्ष तुनीवा॥
लविले रा मसै दी॥ ७॥ मनाते लजायो नि॥
याहाकु डावा॥ दिल्हा भेटि चाजा इत्ता थोर॥
हावा॥ बके हाके देता चिडे सागडाडि॥ महा॥
मेघ गंभीर तै सागडाडि॥ गिर सुरा जुपा
सकाला ब्रसंगे॥ सव्यामाकती धाव रेला मा
वेगे॥ रघुनाथ वै कुंटधामा सी गेले॥ तथी
दास त्यंण माकति निरवीले॥ ९॥ प्रभु चे महा
वाक्य है सस केले॥ द्योदा महे प्रस यासी॥
सीध आले॥ जना माजि है सांगे ज्ञाहि पुरेना
आवस्ता मनी लागलि है मेरेना॥ ३०॥ ५॥

प्रश्नोपच्छेष्टु चित्पूर्णे च भवत्तां तिष्ठु अस्ति

स्तु अप्तु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु

विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com